उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स

UTTARAKHAND EXAM NOTES

Mr. Satpal Chauhan
Sir

उत्तराखण्ड 'समूह "ग"

VDO/VPDO/RO/ARO

सहायक समाज अधिकारी

चकबंदी अधिकारी/सुपर वाइजर

पटवारी/उत्तराखण्ड पुलिस

एल.टी./प्रवक्ता/आबकारी

आदि हेतु सम्पूर्ण हस्त लिखित अध्ययन सामग्री एवं प्रैक्टिस सैट के लिए संपर्क करें।

7579431731, 9411385738

L-58, MDDA Complex, Clock Tower, Dehradun
www.uttarakhandexamnotes.com

बोक्सा

थारुओं की ही तरह बोक्सा भी तराई के मूल निवासी है, ये भी स्वयं को राजस्थान के राजपूत मानते हैं। कुछ मानव विज्ञानी इन्हे थारुओं की एक शाखा मानते है। कुछ मानव विज्ञानी उन्हे भी मंगोलियन मानते हैं।

बोक्सा तराई के अलावा कोटद्वार-भाबर और देहरादून मे भी बसे है। इनकी एक शाखा कभी 'मिहिर या मेहर' के नाम से देहरादून में पाई जाती थी। जो अब अन्य क्षत्रियों में विलीन हो गई है। सहारनपुर और हिमाचल प्रदेश में भी इनकी कुछ शाखाएं है। उन्हे 1981 मे आदिम जाति का दर्जा मिला। जबकि ये 1950 मे अनुसूचित जाति और 1956 में पिछड़ी जाति और 1967 मे जनजाति घोषित किए गए थे। . . . .

PTO

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल चौहान 7579431731

उत्तराखण्ड मे निवास करने वाली पांच जनजातियों में से एक बोक्सा भी अन्य जातियों की तरह अपनी एक विशेष पहचान रखती है। उत्तराखण्ड मे इस जाति के लोग नैनीताल जिले के रामनगर, उधम सिंह नगर के बाजपुर, काशीपुर एवं गदरपुर, देहरादून जिले के डोईवाला, सहसपुर तथा पौड़ी के दुगड्डा विकास खण्डो में निवास करते है.

जनसंख्या की दृष्टि से बोक्सा आबादी का 63 प्रतिशत भाग नैनीताल जिले मे निवास करता है। बोक्सा को मानव विज्ञानीयों ने पुश्तैनी खानाबदोश माना है। परन्तु इनके मूल के बारे मे भी विद्वान प्रायः एकमत नही है। नाक नक्श के हिसाब से अधिकतर विद्वानो ने इनको मंगोल नस्ल बताया है। मानव विज्ञानी सर्वेक्षण विभाग के विज्ञानी डा० जितेन्द्र सिंह ने अपने शोध मे इन्हे किरातो का वंशज तथा थारु की ही एक उपशाखा माना है। कुछ बोक्सा लोग स्वयं स्वीकार करते है कि उनके पूर्वजों की बकरे के समान लम्बी दाढ़ी (बोक) होने के कारण उन्हे बोक्सा नाम से जाना जाता था। आमिर हसन ने 'बुक्सा' शब्द को पराशियन शब्द 'इक्सा' का अपभ्रंश माना है।

PTO

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल चौहान 7579431731

⇒ कुछ विद्वानो का कहना है कि तराई के बोक्सा कई जातियों के थे और तराई के जंगलों की भयंकर परिस्थितियों में अस्तित्व को बचाने के लिए उन्होने "लून-लोटा" प्रथा के जरिये आपस में विलय कर लिया और इसी तरह वे जाति विहिन हो गये।

कुछ विद्वानो और खासकर बोक्सा महिलाओं का मानना है कि मुगलों के आक्रमण के दौरान कुछ राजपूतों महिलाएं अपने सेवको के साथ भागकर तराई में आ गई थी तथा यह जाति इन्ही की नस्ल है।

⇒ विद्वानो के अनुसार तराई में बोक्सा सबसे पहले 'बनबसा' नामक स्थान पर बसे।

एक विद्वान ने लिखा है कि धारानगर के एक राजा का नाम जगतदेव था जिसकी संतान बोक्सा तथा राजा जगतदेव के सौतेले भाई रणधीर की संताने थारू कहलाई। बोक्सा आज भी स्वयं को धारा नगर के परमार वंश से सम्बन्धित मानते है

PTO

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल चौहान सर
7579431731

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल चौहान सर 7579431731

⊛ संवैधानिक स्थिति -

इस जाति के लोगो को भी 1967 में अनुसूचित जनजाति का दर्जा दिया गया। इससे पूर्व इन्हे बोक्सा क्षत्रिय माना जाता था पo गोविन्द बल्लभ पन्त की अध्यक्षता में गठित समिति के अध्ययन में इन्हे सामाजिक और आर्थिक रूप से अत्यधिक पिछड़ा पाया गया तो सन 1950 में राष्ट्रपति द्वारा जारी एक आदेश के अनुसार इन्हे अनुसूचित जाति की श्रेणी में रखा गया। 1956 में इन्हे अनुसूचित जातियो की श्रेणी से हटाकर पिछड़ी जातियो में शामिल किया गया. 1957 में पिछड़ा वर्ग आयोग ने इन्हे अनुसूचित जाति की श्रेणी में रखने की सिफारिश की थी. परन्तु 1967 में इन्हे उत्तर प्रदेश की 5 अन्य जातियों के साथ अनुसूचित जनजातियो की श्रेणी में शामिल कर दिया गया। 1981 में भारत सरकार ने बोक्सा को भी आदिम जनजातियो में शामिल कर दिया।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल चौहान सर
7579431731

शारीरिक बनावट – बोक्सा लोगो की औसत लम्बाई 5 फुट 4 इंच से लेकर 5 फुट 8 इंच तक पायी गई है। वे गठीले और मजबूत कदकाठी के होते हैं इनका रंग रूप गेहुवां या सांवला होता है और चेहरा चौड़ा, तिरछी आंखे, चपटी नाक, मोटे होट और काले बाल होते है। बोक्सा की दाड़ी छितरी और हल्की होती है।

परंपराएं और विवाह – बोक्सा जनजातियों में पितृसत्तात्मक, पितृवंशीय एवं पितृस्थानीय परिवार पाये जाते है। पिता के नाम पर वंश चलता है। इस जाति में अन्तर्जातीय – बहिर्गोतीय विवाह प्रथा प्रचलित है। बोक्सा जाति की वैवाहिक परंपरा अनोखी है उनके लिये विवाह जीवन का एक भाव महत्वपूर्ण पड़ाव है। जंडा विवाह से पूर्व वर को वधू पक्ष को इस बात से संतुष्ट करना होता है कि वह हर हाल में वधू का भरण पोषण कर सकता है।

शादी से पहले इम्तेहान :-

यूं तो वर का असल इम्तेहान शादी के बाद होता है, लेकिन बोक्सा जनजाति के युवाओं को गृहस्थ आश्रम में प्रवेश के लिए भी कठिन परीक्षा से गुजरना पड़ता है हालांकि यह चुनौती अफ्रीका के हैमर आदिवासियों जैसी दुष्कर नहीं, लेकिन इतनी आसान भी नहीं है। हैमर आदिवासियों में विवाह योग्य युवक को पंक्ति में खड़े लगभग दर्जन भर सांडों के ऊपर से दौड़कर कम से कम दो मर्तबा पार उतरना होता है। जबकि बोक्साओं में वर को विवाह से पहले कन्या के घर में हल जोतने और लकड़ी काटने से लेकर झोपड़ी तक बनानी होती है।

बोक्सा बदलते वक्त में काफी हद तक अपनी परंपराओं को सहेजे हुए हैं। बोक्सों द्वारा पीपल की भुम्या देवता के रूप में पूजा करने के बाद सगाई की रस्म निभाई जाती है और तब शुरू होती है वर की परीक्षा। इसके तहत वर को कुछ समय के लिए कन्या के घर में रहना पड़ता है। इस दौरान कन्या पक्ष उससे खेतो में हल लगवाता है। कुल्हाड़ी से लकड़ी काटनी होती है और झोपड़ी बनवाई जाती है। जब साबित हो जाता है लड़का सुयोग्य है तब पंचायत में विवाह की तिथि घोषित की जाती है।

(*) धार्मिक मान्यताएं एवं त्योहार -

भारत की अन्य जनजातियों की ही तरह बोक्सा भी स्वभाव से प्रकृति के उपासक है, लेकिन अन्य जातियों के सम्पर्क से यह आदिम जाति भी हिन्दू धर्म को मानती है मुख्य रूप से वे दुर्गा पूजक है। जिसे वे ग्राम खेड़ी कहते है। काशीपुर की चामुण्डा देवी इनकी सबसे बड़ी देवी मानी जाती है।

इनके व्रत एवं त्योहार भी हिन्दुओं के जैसे होते है। होली, दीवाली, दशहरा एवं जन्माष्टमी इनके प्रमुख त्योहार है। चूंकि अंग्रेज खास अधिकारियों से इनके सम्पर्क लम्बे समय तक रहे, इसलिए ये 25 दिसम्बर को बड़ा दिन भी मानते है।

बोक्सा लोग तीज त्योहार एवं मेलो के अत्यधिक शौकीन है इन अवसरो पर अपनी क्षमता से कहीं अधिक फिजूलखर्ची करते है। गरीब लोग उधार या कर्ज लेकर तीज त्योहार या मेलो में खर्च करते है बोक्सा समुदाय में 'चैती' 'नौती' 'रामलीला', 'दीपावली' 'तेरस' होली आदि प्रमुख त्योहार होते है। इनमे चैती वर्ष का प्रथम और प्रमुख त्योहार होता है।

जेठ के महिने में नयी फसल तैयार होने पर भवानी पूजा के तौर पर ग्राम खेड़ी देवी को 'दूलय्या' पूजा दी जाती है -

उत्तराखण्ड ज्ञान कोश
सतपाल चौहान 7579431731

जादू टोना और अन्धविश्वास :

इस जनजाति में जादू-टोना का अत्यधिक प्रचलन रहा है। कुछ विद्वानों का यहां तक मानना है कि इसी अन्धविश्वास और जादू-टोने के कारण इन्हे अन्य स्थानो से निष्कासित कर यहां भेजा गया होगा।

जादू-टोना और तंत्र मंत्र विद्या के जानकार को वे - भरारे कहते है।

बोक्सा लोग रोगी को वैद्य या डाक्टर के पास ले जाने से पूर्व भरारे के पास ले जाते है. जो कि रोगी की नब्ज देखने के बाद झाड़-फूक करता है। भरारे की सलाह पर बकरी या मुर्गे की बलि दी जाती है। कोई कार्य बिगडे रोग लगने या दुर्घटना होने का कारण भूत-प्रेत का रुष्ट होना माना जाता है। युवा पीढ़ी में अब भरारे पर से विश्वास उठता जा रहा है। युवा पीढ़ी इसे ढोंग विद्या तक कहने लगी है। बोक्सा शक्ति के प्रतीक के रूप में पीपल की पूजा करते है। प्रत्येक बोक्सा गांव मुखिया के घर के सामने गामखेड़ी देवी (जिसे भवानी माना जाता है) का मन्दिर होता है। गाम खेड़ी देवी सम्पूर्ण गांववासियों, उनकी फसल पशुधन की रक्षा के साथ बच्चो सभी की रक्षा करती है।

बोक्सा जनजाति आर्थिक रूप से पिछड़ी हुई है। यद्यपि वे कृषि कार्य भी करते हैं, किन्तु सीमित कृषि क्षेत्र एवं अत्यल्प उत्पादन के कारण उन्हें बनियों से उधार भी लेना पड़ता है। जिनके द्वारा उनका शोषण किया जाता है।

'पंचायत' में इनकी बिरादरी में पांच सदस्यों के अलावा एक 'मुंसिफ' तथा एक 'दरोगा' के साथ दो 'सिपाही' भी होते हैं; जो बिरादरी के नियमों एवं आदेशों का पालन करते हैं। इसके अतिरिक्त प्रत्येक गाँव में एक समिति होती है; जिसका प्रमुख 'मुखिया' कहलाता है। इस समिति का कार्य पारिवारिक मतभेदों में निर्णय देना होता है कुछ स्थानों पर इस प्रणाली के स्थान पर प्रजातांत्रिक प्रणाली के रूप में ग्राम सभा -ग्राम-पंचायत के आने पर 'बिरादरी पंचायत' अपना अस्तित्व खो चुकी है।

बोक्सा लोग हिन्दू-देवताओं, यथा- शिव एवं दुर्गा तथा अपने स्थानीय देवताओं, यथा - 'ज्वाल्पा देवी' तथा 'हुलका देवी' की उपासना करते हैं। ये कल्पित आत्मा के रूप में 'बुज्जा' की पूजा करते हैं। पूर्वकाल में अप्राकृतिक रूप से मृत शरीरों को दफनाने की भी प्रथा रही है।

परम्परागत ग्राम प्रशासन

पधान - पहाड़ की नकल करते हुए यह पद अंग्रेज खास अधिकारियों ने सृजित किया था। इसका काम ग्रामीणों से कर वसूल कर अधिकारियों को सौंपना तथा खास (अधिकारियों) अधीक्षक के प्रतिनिधि के रूप में ग्रामीणों को खेती के लिए जमीनें बांटना था। 1969 में यह पद समाप्त हो गया

पंच - यह ग्राम स्तरीय नियंत्रणकारी या परिषद होती है।

तख्त या तखत - बोक्सा आदिम जाति की यह सबसे प्रभावशाली संस्था होती है। इस सर्वोच्च संस्था का सदस्य प्रत्येक गाँव का मुखिया होता है इसका मुख्यालय रामनगर है।

मुंसिफ - इसका काम तखत पंचायत को तकनीकी राय देना।

दरोगा - इसका काम किसी भी विवादित मामले से संबंधित पक्ष को तखत के समक्ष बुलाना और उसकी उपस्थिति सुनिश्चित करना है।

* **नमक-लोटा प्रथा** - बोक्सा आदिम जाति में भी नमक लोटा परम्परा है; जिसके तहत भरी पंचायत के मध्य में पानी से भरा लोटा रख दिया जाता है और बोक्सा जाति के लोग इस भरे लोटे में एक-एक चुटकी नमक डाल शपथ लेते हैं।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स

UTTARAKHAND EXAM NOTES

उत्तराखण्ड पीसीएस (PCS), उत्तराखण्ड लोअर पीसीएस (PCS), समीक्षा अधिकारी, प्रवक्ता, एल0 टी0, उत्तराखण्ड वन दरोगा, उत्तराखण्ड समूह ग, उत्तराखण्ड कांस्टेबल एंव दरोगा, आबकारी एंव प्रवर्तन सिपाही, उत्तराखण्ड हाईकोर्ट क्लर्क। हमारे द्वारा सभी प्रतियोगी परीक्षाओं से संबंधित ऑनलाइन तथा ऑफलाइन हस्तलिखित नोट्स उपलब्ध कराये जाते हैं।

सतपाल चौहान

ADDRESS: L-58 MDDA COMPLEX CLOCK TOWER DEHRADUN UTTARAKHAND
PH: 7579431731, 9411385738, E-MAIL: uttarakhandexamnotes@gmail.com
WEBSITE:- www.uttarakhandexamnotes.com
Facebook Page: https://www.facebook.com/UTTARAKHANDEXAMNOTES/